एक देखो ए अचंभा, चाल चले संसार।
जाहेर है ए उलटा, जो देखिए कर विचार।। २२ ।।

एक और आश्चर्य (हैरानी) की बात देखो जिसमें संसार चलता है। यदि दिल में विचार करके देखें तो यह जाहिरी में भी उलटा है।

सांचे को झूठा कहें, और झूठे को कहें सांच।
सो भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच।। २३ ।।

यह सत् आत्मा को झूठा कहते हैं और झूठे शरीर को सत् माने बैठे हैं। संसार के सभी लोग झूठे शरीर में ही लिप्त हैं। इस बात को और जाहिर करके बताती हूं।

आकार को निराकार कहें, निराकार को आकार।
आप फिरे सब देखें फिरते, असत यों निरधार।। २४ ।।

यह शरीर जो मिट जाने वाला है उसे आकार कहते हैं और आत्मा जो अखण्ड है (अजर-अमर है) उसे निराकार कहते हैं। सारे जगत के जीव इसी चक्कर में घूम फिर रहे हैं। इस तरह से यह झूठा है।

मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार।
तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार।। २५ ।।

सभी संसार के लोग कहते हैं कि यह वृक्ष रूपी ब्रह्माण्ड बिना जड़ (आधार) के खड़ा है। तो इस सपने के ब्रह्माण्ड के जो जीव हैं उन्हें आकार वाला कैसे कहा जाए?

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास।। २६ ।।

जो जन्मता और मरता है उसे आकार वाला नहीं कहना चाहिए। मरने वाले (शरीर को) निराकार और सदा रहने वाले (आत्मा) को आकार (साकार) कहना ही ठीक है (उचित है)।

जिन राचो मृग जल दृष्टे, जाको नाम प्रपंच।
ए छल मायाऐं किया, ऐसे रचे उलटे संच।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से मृग-जल के प्रपंच (जाल) में मत फंसो। यह पूरा संसार उलटा है और संशय से भरा है।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३९५ ।।

वेद का कोहेड़ा

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल।
याकी भी नेक केहेके, देऊं सो आंकड़ी टाल।। १ ।।

वेद के कोहेड़े की जाली बड़ी बारीक गुंथी है। इसकी थोड़ी-सी हकीकत कहकर संशय मिटा देती हूं।

वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध।
मन नारद फिरे दसों दिसा, वेदें बांध किए बेसुध।। २ ।।

ब्रह्माण्ड का आकार सपने का है इसमें बुद्धि के मालिक ब्रह्माजी हैं। मन के मालिक नारदजी हैं। यह दसों दिशाओं में घूमते हैं। इस तरह से वेदों ने सबको बांधकर बेसुध कर रखा है।

Nijanand App

लगाए सब रब्दें, व्याकरण वाद अंधकार।
या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार।। ३ ।।

व्याकरण के वाद-विवाद में सबको लड़ा रखा है। इस तरह से सारा संसार वेदों की बुद्धि से (ज्ञान से) बेसुध हो गया है। अन्धकार के ज्ञान में इनका विवेक और विचार शून्य हो गया है (रहा ही नहीं)।

बंध बांधे या विध, हर वस्त के बारे नाम।
सो बानी ले बड़ी कीनी, ए सब छल के काम।। ४ ।।

इस तरह का बंध बांध दिया है कि हर अक्षर के बारह नाम रख दिए हैं। वाणी का विस्तार कर दिया है। यह सब कपट (छल) का काम है।

लुगे लुगे के जुदे माएने, द्वादस के प्रकार।
उलटाए मूल माएने, बांधे अटकलें अपार।। ५ ।।

एक-एक शब्द के अलग-अलग मायने बारह तरह से करते हैं। मूल भावों को उलटा कर उलझा देते हैं। अटकल से तरह-तरह के अर्थ करते हैं।

अर्थ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने।
मूढ़ों को समझावने, रेहेस बीच में आने।। ६ ।।

अर्थ को उलटने के लिए व्याकरण से खींचातानी करते हैं और मूर्खों को समझाने के लिए बीच में कहानियां सुनाते हैं।

ऐसी कई आंकड़ियों मिने, बोलें बारे तरफ।
रेहेस रंचक धरें बीचमें, समझाए ना किन हरफ।। ७ ।।

ऐसी अनेक आंकड़ियां (घुंडिया, गांठें) हैं जिनके बारह-बारह अर्थ करते हैं, जिसकी किसी को भी हकीकत का पता चलता नहीं है। हकीकत को छिपाने के लिए बीच में मनगढ़ंत कहानियां सुनाते हैं।

बारे तरफों बोलत, एक अखर एक मात्र।
ऐसे बांध बतीस श्लोक में, बड़ा छल किया है सास्त्र।। ८ ।।

एक अक्षर में बारह मात्रा लगाकर बारह तरह से बोलते हैं। ऐसे बत्तीस अक्षर जोड़कर श्लोक बना कर शास्त्रों ने बड़ा छल किया है।

बारे मात्र एक अखर, अखर श्लोक बतीस।
छल एते आड़े अर्थके, और खोज करें जगदीस।। ९ ।।

एक अक्षर की बारह मात्राएं तथा एक श्लोक के बत्तीस अक्षर बनाकर (यानी एक अक्षर के बारह अर्थ और बत्तीस अक्षरों के तीन सौ चौरासी अर्थ हुए तो ऐसे श्लोक वाले वेदों का ज्ञान पढ़कर आप स्वयं सोचें कि हकीकत में क्या परमात्मा मिलेगा) परमात्मा की खोज करते हैं। जहां हकीकत के अर्थ के सामने इतने ज्यादा अर्थ हों तो वह परमात्मा कैसे मिलेगा?

अर्थ आड़े कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल।
अखरा अर्थ भी ना होवहीं, किया भाव अर्थ अटकल।।१०।।

अर्थों की आड़ में भी कई तरह घुमा-फिराकर अर्थ करते हैं और दुनियां को ठगते हैं। अक्षर का तो अर्थ आता नहीं है पर भावार्थ अटकल से करते हैं।

Nijanand App

जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत।
सो अर्थ दृढ़ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत।। ११ ।।

जिसका नाम संस्कृत है वह संशय से ही बनी है, क्योंकि इसके कई अर्थ निकलते हैं तो उस एक सच्चाई को कैसे पाया जाए?

सो पढ़े पंडित जुध करें, एक काने को टुकड़े होए।
आपसमें जो लड़ मरें, एक मात्र ना छोड़ें कोए।। १२ ।।

संस्कृत के पढ़े विद्वान बड़े आ की मात्रा के लिए झगड़ा करते हैं। वह एक मात्रा भी नहीं छोड़ते और आपस में लड़ मरते हैं।

ए वाद बानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान।
त्रास स्वांत न होवे सुपने, ऐसा व्याकरण ग्यान।। १३ ।।

इस वाद-विवाद की बेसुधी में जो वचन मुख से निकल जाते हैं, उसी को पकड़ लेते हैं। व्याकरण की व्याख्या में उलझे रहते हैं और उन्हें शान्ति नहीं मिलती है।

ए बानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान।
सो खेंचा खेंच ना छूटहीं, लिए क्रोध गुमान।। १४ ।।

इस तरह से संस्कृत के श्लोकों की वाणी के ग्रन्थों का विस्तार किया। पण्डितों की आपस की खींचतान नहीं छूटती है तथा वह क्रोध और बुद्धि के अहंकार में ही भटकते हैं।

ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़।
बड़े होए खोले माएने, एह चली छल रूढ़।। १५ ।।

ऐसी छल की वाणी पढ़ने वालों को पण्डित कहते हैं और मूर्ख लोग ही उनका सम्मान करते हैं। यह पण्डित लोग अपने को बड़ा बताकर तरह-तरह के अर्थ करते हैं। ऐसी छल की रीति चल रही है।

सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित।
जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़ें नहीं पंडित।। १६ ।।

सीधी भाषा जिसके अर्थ भी सीधे होते हैं और सभी लोग समझते हैं, उस भाषा को पण्डित लोग कभी ग्रहण नहीं करते हैं।

एक अर्थ न कहें सीधा, ए जाहेर हिन्दुस्तान।
अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़ें छल बान।। १७ ।।

हिन्दुस्तानी भाषा में वह पण्डित एक भी सीधी बात नहीं बताते हैं बल्कि अर्थ को उलटने के वास्ते छल की बोली (संस्कृत) ही बोलते हैं।

ए खेल जाको सोई जाने, दूजा खेल सारा छल।
ए छल के जीव न छूटे छल थें, जो देखो करते बल।। १८ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! (सुन्दरसाथजी) देखो, सब जगह छल ही छल है। छल के जीव छल के ज्ञान (संस्कृत) से बाहर (माँया से बाहर) नहीं जा सकते, चाहे कितनी ही आजमाइश (उपाय) कर लो।

Nijanand App

एक उरझन वैराटकी, दूजी वेद की उरझन।
ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन।। १९ ।।

एक उरझन (उलझन) वैराट की है। इसी तरह दूसरी उलझन वेद की है। यह तो मैंने तुम्हें समझाने के लिए थोड़ी सी बताई है। इस छल का तो बहुत बड़ा विस्तार है।

मुख उदर के कोहेड़े, रचे मिने सुपन।
ए सुध काहू न परी, मिने झीलें मोह के जन।। २० ।।

एक मुख का (वेद), दूसरा नाभि का (वैराट), यह दोनों धुन्ध हैं जो सपने में बनाए गए हैं, इसलिए इसके अन्दर गफलत (बेसुधी) में खेलने वाले लोगों को इनकी पहचान नहीं होती।

वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह।
देव जैसी पातरी, ए चलत दुनियां जेह।। २१ ।।

वैराट और वेद दोनों को देखकर के 'जैसा देव तैसी पूजा' के सिद्धान्त के अनुसार दुनियां चलती है और ऐसा समझकर सेवा करती है।

ए जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत।
ए मोहोरे उपजे मोहके, तिनको ए सब सत।। २२ ।।

यहां के साधु तथा शास्त्रकारों की उत्पत्ति माया से हुई है और वह अपनी बुद्धि के अनुसार ही बोलते हैं। उनको यह माया का संसार सत् (सत्य, अखण्ड) लग रहा है।

तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लों वचन।
उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहें सुंन।। २३ ।।

वेदों ने चौदह लोकों को देखा और वचन से निराकार तक वर्णन किया। आगे अटकल से कहकर फिर निराकार में ही डूब गये (समा गए)।

ए देखो तुम जाहेर, पांचों उपजे तत्व।
ए मोह मिने मन खेलहीं, सब मन की उतपत।। २४ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! तुम देखो, यह ब्रह्माण्ड पांच तत्वों से बना है। इसमें संशय में ही जीव भटकते हैं और जीव जन्मते हैं।

ए सारों में व्यापक, थावर और जंगम।
सबन थें एक है न्यारा, याको जाने सृष्टब्रह्म।। २५ ।।

सब चर (जंगम) और अचर (स्थावर) में जीव व्यापक है। इन सबसे न्यारा जो परब्रह्म है उसको केवल ब्रह्मसृष्टि ही जानती है।

दसों दिसा भवसागर, देखत एह सुपन।
आवरण गिरद मोह को, निराकार कहावे सुंन।। २६ ।।

दसों दिशाओं में स्वप्न का भवसागर है। इसके चारों तरफ मोहतत्व (संशय) का आवरण है, इसे निराकार और शून्य कहते हैं।

Nijanand App

ए इंड सारा कोहेड़ा, खेल चौदे भवन।
सुर असुर कई अनेक भांते, हुआ छल उतपन।। २७ ।।

चौदह लोक सब धुन्ध में हैं। इन सबमें माया व्यापक है। यहां पर देव और असुर कई तरह के संशय से भरे जीवों के साथ खेलते हैं।

वनस्पति पसु पंखी, आदमी जीव जंत।
मच्छ कच्छ सबसागर, रच्यो एह प्रपंच।। २८ ।।

यहां वनस्पति, पशु, पक्षी, आदमी, जीव, जन्तु, मछली, कछुआ तथा सागर सब झूठ के ही हैं।

जीवों मिने जुदी जिनसें, कहियत चारों खान।
थावर जंगम मिलके, लाख चौरासी निरमान।। २९ ।।

इसके अन्दर जीव तरह-तरह के तनों में चार तरह से (अण्डे से, शरीर से; पसीने से, अंकुर फोड़कर जमीन से) पैदा होते हैं जो पेड़ की तरह जड़ से, कोई पांव से, कोई पेट से, कोई पंख से एक स्थान पर खड़े रहते हैं। इस तरह से चौरासी लाख योनियों का निर्माण है।

कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल।
सब खेलें ख्वाबी पुतले, आड़ी मोह सागर पाल।। ३० ।।

कोई बैकुण्ठ में, कोई यमपुरी में, कोई स्वर्ग में, कोई पाताल में यह सब सपने के जीव खेलते हैं। इसके आगे मोहतत्व (निराकार) का परदा पड़ा है।

जो बनजारे खेल के, तिन सिर जम को डंड।
कोइक दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड।। ३१ ।।

इस संसार में जो जीव खेल रहे हैं, उनको यमराज के सामने जाना पड़ता है। कर्मों के हिसाब से कुछ दिन स्वर्ग का सुख लेकर पीछे नरक के कुण्ड में सजा भुगतनी पड़ती है।

लाठी तेरे लोक पर, संजमपुरी सिरदार।
जो जाने नहीं जगदीस को, तिन सिर जम की मार।। ३२ ।।

तेरह लोकों के ऊपर बैकुण्ठ में भगवान विष्णु मालिक हैं। जिसने उसे पहचान कर पूजा नहीं की उसे यमराज की मार खानी पड़ती है।

ए छल बनज छोड़ के, करे बैकुंठ वेपार।
ए सत लोक इनका, कोई गले निराकार।। ३३ ।।

संसार में कपट का रास्ता (धन्धा) छोड़कर जो बैकुण्ठ में जाने का प्रयत्न करते हैं, वह इसी बैकुण्ठ को सत् मान बैठे हैं और अन्त में निराकार में गल जाते हैं।

तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास।
पहाड़ कुली अष्ट जोजन, लाख चौसठ बास।। ३४ ।।

चौदह लोक इसी ब्रह्माण्ड में हैं। इसमें पचास करोड़ योजन जमीन बताई गयी है। इसमें पहाड़ कुल आठ योजन में हैं तथा चौसठ लाख योजन में बस्ती है।

Nijanand App

पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत।
यों निरमान बांध के, ले सुपन किया सत।। ३५ ।।

पांच तत्व तथा छठा जीव से बना शरीर सपने का है, इसको शास्त्रों में अपने मत में सत कहा है।

देखे सातों सागर, और देखे सातों लोक।
पाताल सातों देखिया, जागे पीछे सब फोक।। ३६ ।।

मैंने सातों सागरों को देखा (लवण, इक्षु रस, मधु, घृत, दधि, क्षीर, मीठा पानी) तथा सातों लोकों [भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सतलोक (बैकुण्ठ)], सातों पातालों (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, और पाताल) देखा, परन्तु यह सब माया के हैं। पल में प्रलय में आने वाले हैं।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ४३१ ॥

प्रकरण अवतारों का

ए ऐसा था छल अंधेर, काहूं हाथ न सूझे हाथ।
बंध पड़े दृष्ट देखते, तामें आया सारा साथ।। १ ।।

इस अज्ञानता से भरे हुए संसार में जहां पर परब्रह्म की कोई सुध देने वाला नहीं है, जहां माया को देखते ही ऐसे बंध में पड़ जाते हैं, उसे देखने के लिए परमधाम से सुन्दरसाथ (ब्रह्मसृष्टि) आए।

तो पिया मिने आए के, सब छुड़ाई सोहागिन।
बोए के नूर प्रकासिया, बीज ल्याए मूल वतन।। २ ।।

पिया ने अपनी ब्रह्मसृष्टियों को यहां खेल में आकर जागृत बुद्धि देकर माया से छुड़ाया। पिया ने मूल घर परमधाम से तारतम वाणी के ज्ञान का बीज लाकर सारे संसार में जागृत बुद्धि के ज्ञान का उजाला किया।

ए खेल किया तुम खातिर, तुम देखन आइयां जेह।
खेल देख के चलसी, घर बातां करसी एह।। ३ ।।

हे साथजी! यह खेल तुम्हारे लिए बनाया है इसे आप देखने आए हैं। इस खेल को देखकर हम वापस घर चलेंगे और घर चलकर क्या खेल देखा, इस पर बातें करेंगे।

तुम खेल देखन कारने, किया मनोरथ एह।
ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखूं नहीं संदेह।। ४ ।।

तुमने खेल देखने की परमधाम में चाहना की थी, इसलिए अब तुम्हारे वास्ते यह खेल धनी ने बनाया और तुम्हारे वास्ते ही बेशक वाणी लाए हैं जिससे सारे संशय मिट जाएं।

ए खेल सांचा तो देख्या, जो अखंड करूं फेर।
पार वतन देखाय के, उड़ाऊं सब अंधेर।। ५ ।।

इस खेल का देखना तभी सत्य होगा जब इसे दुबारा अखण्ड करूं (पहला बृज का ब्रह्माण्ड अखण्ड हो चुका है)। अब तारतम वाणी के बल से **अक्षर** के पार का अपना घर दिखा करके सब अज्ञानता दूर कर देंगे।

Nijanand App